International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

मगध प्रमंडल की धार्मिक एवं सांस्कृतिक धरोहर: पर्यटन विकास के संदर्भ में एक अध्ययन

रवि रंजन कुमार[1], डॉ. अख्तर रोमानी[2]

[1] शोधार्थी, इतिहास विभाग, मगध विश्वविद्यालय, बोधगया, बिहार, भारत
[2]प्रोफेसर, इतिहास विभाग, एस. एन. सिन्हा कॉलेज, जहानाबाद, मगध विश्वविद्यालय, बोधगया बिहार

सारांश
मगध प्रमंडल भारत की प्राचीन सभ्यता, धार्मिक परंपराओं तथा सांस्कृतिक विरासत का एक महत्वपूर्ण केंद्र है, जिसने भारतीय इतिहास, दर्शन, कला एवं पर्यटन के विकास में उल्लेखनीय योगदान दिया है। प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य मगध प्रमंडल की प्रमुख धार्मिक एवं सांस्कृतिक धरोहरों का ऐतिहासिक विश्लेषण करते हुए उनके पर्यटन विकास में योगदान का मूल्यांकन करना है। अध्ययन में ऐतिहासिक एवं वर्णनात्मक शोध पद्धति का उपयोग किया गया है तथा आवश्यक तथ्यों का संकलन पुस्तकों, शोध-पत्रों, सरकारी प्रकाशनों, पर्यटन विभाग की रिपोर्टों एवं अन्य द्वितीयक स्रोतों से किया गया है। अध्ययन से ज्ञात होता है कि महाबोधि मंदिर, विष्णुपद मंदिर, राजगीर, पावापुरी, बराबर गुफाएँ तथा अन्य धार्मिक एवं सांस्कृतिक स्थल न केवल आस्था के प्रमुख केंद्र हैं, बल्कि क्षेत्रीय आर्थिक विकास, रोजगार सृजन तथा सांस्कृतिक संरक्षण के महत्वपूर्ण आधार भी हैं। अध्ययन यह भी इंगित करता है कि पर्यटन अवसंरचना, विरासत संरक्षण, पर्यटक सुविधाओं, डिजिटल प्रचार-प्रसार तथा स्थानीय समुदाय की सहभागिता के क्षेत्र में अभी पर्याप्त सुधार की आवश्यकता है। यदि सांस्कृतिक विरासत संरक्षण एवं पर्यटन विकास को समन्वित एवं सतत दृष्टिकोण के साथ क्रियान्वित किया जाए, तो मगध प्रमंडल राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय धार्मिक पर्यटन के प्रमुख केंद्र के रूप में और अधिक विकसित हो सकता है। यह अध्ययन नीति-निर्माताओं, पर्यटन योजनाकारों तथा शोधकर्ताओं के लिए उपयोगी आधार प्रदान करता है तथा विरासत संरक्षण और सतत पर्यटन विकास के मध्य संतुलित संबंध स्थापित करने की दिशा में महत्वपूर्ण सुझाव प्रस्तुत करता है।

प्रमुख शब्द: धार्मिक धरोहर, सांस्कृतिक विरासत, धार्मिक पर्यटन, पर्यटन विकास, विरासत संरक्षण, सतत पर्यटन

1. प्रस्तावना

मानव सभ्यता के विकास में सांस्कृतिक एवं धार्मिक धरोहरों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। किसी भी क्षेत्र की ऐतिहासिक स्मृतियाँ, धार्मिक आस्थाएँ, स्थापत्य कला, परंपराएँ तथा सांस्कृतिक विरासत उसकी विशिष्ट पहचान का निर्माण करती हैं। ये धरोहरें केवल अतीत की स्मृतियों का प्रतिनिधित्व नहीं करतीं, बल्कि समाज के सांस्कृतिक मूल्यों, जीवन-दर्शन और ऐतिहासिक निरंतरता को भी संरक्षित रखती हैं। वर्तमान समय में सांस्कृतिक धरोहरों का महत्व केवल इतिहास तक सीमित नहीं है, बल्कि वे पर्यटन, स्थानीय अर्थव्यवस्था, सामाजिक विकास और सांस्कृतिक संरक्षण के प्रमुख आधार के रूप में भी उभर रही हैं। इसी कारण विश्व के अनेक देशों में सांस्कृतिक एवं धार्मिक विरासत के संरक्षण तथा उसके सतत उपयोग पर विशेष बल दिया जा रहा है।

सांस्कृतिक धरोहर में वे सभी मूर्त एवं अमूर्त तत्व सम्मिलित होते हैं जो किसी समाज की ऐतिहासिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक पहचान को अभिव्यक्त करते हैं। प्राचीन मंदिर, स्तूप, मठ, गुफाएँ, मस्जिदें, स्मारक, शिलालेख, मूर्तिकला, लोक परंपराएँ, धार्मिक अनुष्ठान, मेले तथा सांस्कृतिक उत्सव इस विरासत के प्रमुख घटक हैं। इन धरोहरों के माध्यम से एक पीढ़ी अपनी सांस्कृतिक परंपराओं और ऐतिहासिक अनुभवों को अगली पीढ़ी तक पहुँचाती है। इसलिए सांस्कृतिक विरासत का संरक्षण केवल ऐतिहासिक उत्तरदायित्व नहीं, बल्कि सतत विकास और सांस्कृतिक निरंतरता की अनिवार्य आवश्यकता भी है।

धार्मिक पर्यटन विश्व पर्यटन का एक महत्वपूर्ण आयाम है, जिसमें श्रद्धा, आध्यात्मिक अनुभव, सांस्कृतिक जिज्ञासा और ऐतिहासिक रुचि एक साथ समाहित होती हैं। धार्मिक स्थलों पर आने वाले श्रद्धालु एवं पर्यटक स्थानीय अर्थव्यवस्था को गति प्रदान करते हैं तथा परिवहन, आवास, हस्तशिल्प, स्थानीय व्यापार और रोजगार के अवसरों का विस्तार करते हैं। इसके अतिरिक्त धार्मिक पर्यटन विभिन्न संस्कृतियों के मध्य संवाद, सामाजिक समरसता तथा सांस्कृतिक आदान-प्रदान को भी प्रोत्साहित करता है। यदि धार्मिक स्थलों का संरक्षण और प्रबंधन योजनाबद्ध ढंग से किया जाए, तो वे क्षेत्रीय विकास के साथ-साथ सांस्कृतिक विरासत के संवर्धन में भी महत्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं।

भारत प्राचीन सभ्यताओं, विविध धार्मिक परंपराओं और समृद्ध सांस्कृतिक विरासत का देश है। यहाँ हिन्दू, बौद्ध, जैन, सिख, इस्लाम तथा अन्य धार्मिक परंपराओं से जुड़े असंख्य तीर्थस्थल स्थित हैं, जो प्रत्येक वर्ष देश-विदेश से लाखों श्रद्धालुओं एवं पर्यटकों को आकर्षित करते हैं। धार्मिक पर्यटन भारत के पर्यटन उद्योग का एक प्रमुख आधार बन चुका है। इसी परिप्रेक्ष्य में बिहार का विशेष महत्व है, क्योंकि यह राज्य भारतीय इतिहास, धर्म और दर्शन के विकास का प्रमुख केंद्र रहा है। भगवान बुद्ध को बोधगया में ज्ञान की प्राप्ति हुई, जैन धर्म के अनेक तीर्थ बिहार में विकसित हुए तथा हिन्दू धर्म के कई महत्वपूर्ण धार्मिक स्थल भी इसी क्षेत्र में स्थित हैं। इस ऐतिहासिक एवं धार्मिक विरासत ने बिहार को राष्ट्रीय ही नहीं, बल्कि अंतरराष्ट्रीय धार्मिक पर्यटन के मानचित्र पर भी विशिष्ट स्थान प्रदान किया है।

बिहार का मगध प्रमंडल अपनी बहुआयामी सांस्कृतिक एवं धार्मिक विरासत के लिए विशेष रूप से प्रसिद्ध है। गया का विष्णुपद मंदिर, बोधगया का महाबोधि मंदिर, बराबर एवं नागार्जुनी गुफाएँ, ब्रह्मयोनि, प्रेतशिला, रामशिला तथा अन्य अनेक धार्मिक एवं ऐतिहासिक स्थल इस क्षेत्र की प्राचीनता और सांस्कृतिक समृद्धि के सशक्त प्रमाण हैं। इन स्थलों का संबंध विभिन्न ऐतिहासिक कालों, धार्मिक परंपराओं और दार्शनिक विचारधाराओं से रहा है, जिसके कारण इनका महत्व केवल धार्मिक आस्था तक सीमित नहीं है, बल्कि ये भारतीय इतिहास, कला, स्थापत्य, पुरातत्व और सांस्कृतिक अध्ययन के लिए भी अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। साथ ही, ये स्थल धार्मिक पर्यटन के माध्यम से क्षेत्रीय आर्थिक गतिविधियों, स्थानीय रोजगार और सामाजिक विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। यह अध्ययन विरासत संरक्षण और सतत पर्यटन विकास के मध्य संतुलन स्थापित करने की दिशा में उपयोगी नीतिगत सुझाव प्रदान करने का प्रयास भी करता है।

2. साहित्य समीक्षा

धार्मिक एवं सांस्कृतिक पर्यटन समकालीन पर्यटन अध्ययन का एक महत्वपूर्ण क्षेत्र बन चुका है। विशेष रूप से बिहार जैसे ऐतिहासिक एवं धार्मिक दृष्टि से समृद्ध राज्य में पर्यटन, सांस्कृतिक विरासत संरक्षण, स्थानीय आर्थिक विकास तथा क्षेत्रीय पहचान के मध्य संबंधों पर अनेक शोध किए गए हैं। उपलब्ध साहित्य से स्पष्ट होता है कि बिहार में धार्मिक पर्यटन की व्यापक संभावनाएँ विद्यमान हैं, किन्तु इनका समग्र एवं क्षेत्रीय स्तर पर विश्लेषण अभी भी सीमित है।

धीरज, कुमार एवं रानी (2022)[1] ने बिहार में पर्यटन के सतत विकास को उद्यमिता के एक महत्वपूर्ण अवसर के रूप में प्रस्तुत किया। अध्ययन में बौद्ध, जैन, सिख, रामायण, सूफी तथा शिव-शक्ति पर्यटन परिपथों की उपयोगिता का विश्लेषण करते हुए यह निष्कर्ष दिया गया कि पर्यटन स्थानीय रोजगार, उद्यमिता और क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ करने की क्षमता रखता है। साथ ही, विरासत संरक्षण और पर्यटन प्रबंधन के मध्य संतुलित नीति अपनाने की आवश्यकता पर बल दिया गया। **कुमारी** (2022)[2] ने कोविड-19 के पश्चात बिहार में बौद्ध पर्यटन के पुनर्जीवन में सरकारी नीतियों की भूमिका का अध्ययन किया। शोध में पाया गया कि पर्यटन नीति, अंतरराष्ट्रीय सहयोग तथा आधारभूत सुविधाओं के विकास से धार्मिक पर्यटन को पुनः गति प्रदान की जा सकती है। **घोष, चक्रवर्ती एवं जोहरी** (2024)[3] ने बोधगया को बौद्ध सांस्कृतिक विरासत स्थल के रूप में विश्लेषित करते हुए बताया कि यह स्थान पारंपरिक तीर्थस्थल से विकसित होकर वैश्विक धार्मिक पर्यटन का प्रमुख केंद्र बन चुका है। अध्ययन में विरासत संरक्षण, सांस्कृतिक पहचान तथा पर्यटन विकास के मध्य संतुलन बनाए रखने पर विशेष बल दिया गया। **शर्मा एवं बेहेरा** (2025)[4]ने धार्मिक पर्यटन, मंदिर अर्थव्यवस्था तथा पर्यटन वित्त के संबंध का अध्ययन किया। उनके अनुसार धार्मिक पर्यटन स्थानीय व्यापार, सेवाक्षेत्र, रोजगार तथा क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था के विकास में महत्वपूर्ण योगदान देता है।**कुमारी** (2025)[5] ने बिहार के जिलों की पर्यटन क्षमता का समग्र संकेतकों के आधार पर मूल्यांकन किया। अध्ययन के अनुसार जिन जिलों में धार्मिक एवं ऐतिहासिक धरोहरों के साथ बेहतर आधारभूत सुविधाएँ उपलब्ध हैं, वहाँ पर्यटन विकास की संभावनाएँ अधिक हैं। **कुमार** (2025)[6] ने बिहार के पर्यटन ब्रांडिंग एवं पोज़िशनिंग का अध्ययन करते हुए पाया कि अधिकांश पर्यटक राज्य की पहचान धार्मिक एवं पुरातात्विक विरासत से जोड़ते हैं। उन्होंने प्रभावी ब्रांडिंग, विपणन तथा विरासत संरक्षण को पर्यटन विकास का प्रमुख आधार माना। इसके अतिरिक्त **कुमार** (2026)[7] ने सतत पर्यटन विकास और डेस्टिनेशन ब्रांडिंग के संबंध का विश्लेषण करते हुए विरासत-आधारित पर्यटन को बिहार के दीर्घकालिक पर्यटन विकास की आधारशिला बताया। **साहा एवं बिस्वास** (2026)[8] ने धार्मिक पर्यटन में पर्यटकों के व्यवहार का अध्ययन करते हुए पाया कि व्यक्तिगत प्रेरणा, सामाजिक प्रभाव तथा सरकारी पहल धार्मिक स्थलों की यात्रा करने के निर्णय को सकारात्मक रूप से प्रभावित करते हैं। अध्ययन धार्मिक पर्यटन के सामाजिक एवं व्यवहारिक पक्ष को समझने में महत्वपूर्ण योगदान देता है। **कुमार** (2026)[9] ने धर्म, पर्यटन एवं विकास के मध्य संबंधों का विश्लेषण करते हुए यह निष्कर्ष प्रस्तुत किया कि धार्मिक पर्यटन में सार्वजनिक निवेश से आतिथ्य उद्योग, उद्यमिता, रोजगार तथा क्षेत्रीय आर्थिक गतिविधियों में उल्लेखनीय वृद्धि होती है। **निहाल एवं सील** (2027)[10] ने बिहार के छठ पर्व को सतत धार्मिक पर्यटन के दृष्टिकोण से विश्लेषित करते हुए बताया कि धार्मिक उत्सव सांस्कृतिक पहचान को सुदृढ़ करने के साथ-साथ स्थानीय पर्यटन, सामुदायिक सहभागिता एवं क्षेत्रीय विकास को भी प्रोत्साहित करते हैं।

शोध अंतर

उपलब्ध साहित्य से स्पष्ट होता है कि अधिकांश अध्ययन बिहार में धार्मिक पर्यटन, बौद्ध पर्यटन, पर्यटन ब्रांडिंग, पर्यटक संतुष्टि, सरकारी नीतियों अथवा किसी एक विशिष्ट धार्मिक स्थल तक सीमित हैं। इसके विपरीत मगध प्रमंडल की धार्मिक एवं सांस्कृतिक धरोहरों का ऐतिहासिक महत्व, सांस्कृतिक विरासत, पर्यटन क्षमता, संरक्षण की वर्तमान स्थिति तथा क्षेत्रीय पर्यटन विकास के पारस्परिक संबंधों का समेकित एवं विश्लेषणात्मक अध्ययन अपेक्षाकृत उपलब्ध नहीं है। प्रस्तुत अध्ययन इसी शोध-अंतर को भरने का प्रयास करता है तथा मगध प्रमंडल की प्रमुख धार्मिक एवं सांस्कृतिक धरोहरों का इतिहास, संरक्षण एवं पर्यटन विकास के संदर्भ में समग्र विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

3. मगध प्रमंडल की धार्मिक एवं सांस्कृतिक धरोहर

3.1 ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

मगध प्रमंडल भारतीय इतिहास, संस्कृति और सभ्यता का वह क्षेत्र है जिसने प्राचीन भारत के राजनीतिक, धार्मिक, शैक्षिक तथा सांस्कृतिक विकास को निर्णायक रूप से प्रभावित किया। वैदिक काल के उत्तरार्द्ध से लेकर प्राचीन, मध्यकालीन और आधुनिक काल तक यह क्षेत्र निरंतर सामाजिक, धार्मिक तथा सांस्कृतिक गतिविधियों का प्रमुख केंद्र रहा है। प्राचीन भारत के सोलह महाजनपदों में मगध सबसे अधिक शक्तिशाली और समृद्ध राज्य के रूप में विकसित हुआ। प्रारम्भ में इसकी राजधानी राजगृह (वर्तमान राजगीर) थी, जिसे प्राकृतिक सुरक्षा प्राप्त थी। बाद में राजधानी पाटलिपुत्र स्थानांतरित हुई, जिसने सम्पूर्ण भारतीय उपमहाद्वीप के राजनीतिक और प्रशासनिक केंद्र के रूप में अपनी पहचान स्थापित की। हर्यक, शिशुनाग, नंद, मौर्य, शुंग, कण्व, गुप्त तथा पाल वंशों के शासनकाल में मगध केवल एक राजनीतिक शक्ति ही नहीं रहा, बल्कि धर्म, दर्शन, साहित्य, शिक्षा, कला और स्थापत्य का भी प्रमुख केंद्र बना। मगध की ऐतिहासिक महत्ता का सबसे महत्वपूर्ण पक्ष इसकी धार्मिक बहुलता है। यह वह भूमि है जहाँ भगवान बुद्ध को बोधगया में बोधिवृक्ष के नीचे ज्ञान प्राप्त हुआ, जिससे बौद्ध धर्म का विश्वव्यापी प्रसार संभव हुआ। इसी क्षेत्र में भगवान महावीर ने जैन धर्म के सिद्धांतों का प्रचार-प्रसार किया तथा पावापुरी में निर्वाण प्राप्त किया। दूसरी ओर, गया प्राचीन काल से हिन्दू धर्म का प्रमुख मोक्षधाम माना जाता है, जहाँ पितरों के श्राद्ध और पिंडदान की परंपरा हजारों वर्षों से चली आ रही है। मध्यकाल में सूफी संतों के आगमन ने इस क्षेत्र में धार्मिक सहिष्णुता, आध्यात्मिक संवाद और सामाजिक समरसता की नई परंपरा को विकसित किया। इस प्रकार मगध प्रमंडल विभिन्न धार्मिक परंपराओं के शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व का जीवंत उदाहरण प्रस्तुत करता है। इतिहास के विभिन्न कालखंडों में यहाँ निर्मित मंदिर, स्तूप, विहार, गुफाएँ, शिलालेख, मूर्तियाँ तथा अन्य पुरातात्त्विक अवशेष इस क्षेत्र की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत के प्रमाण हैं। विशेष रूप से सम्राट अशोक द्वारा निर्मित स्मारक, बराबर गुफाओं की शिल्पकला, महाबोधि मंदिर का स्थापत्य तथा विष्णुपद मंदिर की धार्मिक परंपरा भारतीय सांस्कृतिक इतिहास की अमूल्य धरोहर हैं। यूनेस्को द्वारा महाबोधि मंदिर परिसर को विश्व धरोहर घोषित किया जाना इस क्षेत्र की वैश्विक सांस्कृतिक महत्ता को प्रमाणित करता है। आज भी मगध प्रमंडल भारत की प्राचीन सांस्कृतिक विरासत, धार्मिक आस्था और ऐतिहासिक निरंतरता का प्रमुख प्रतिनिधि क्षेत्र माना जाता है।

3.2 प्रमुख धार्मिक स्थल

मगध प्रमंडल धार्मिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से अत्यंत समृद्ध क्षेत्र है, जहाँ अनेक ऐसे तीर्थ एवं विरासत स्थल स्थित हैं जो राष्ट्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपनी विशिष्ट पहचान रखते हैं। इनमें **महाबोधि मंदिर, बोधगया** सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। यह वही पवित्र स्थल है जहाँ भगवान गौतम बुद्ध ने बोधिवृक्ष के नीचे ज्ञान प्राप्त किया था। यह मंदिर यूनेस्को की विश्व धरोहर सूची में शामिल है तथा श्रीलंका, थाईलैंड, जापान, म्यांमार, भूटान, तिब्बत, चीन तथा अन्य अनेक देशों से प्रतिवर्ष लाखों बौद्ध श्रद्धालु यहाँ दर्शन एवं साधना के लिए आते हैं। महाबोधि मंदिर केवल धार्मिक आस्था का केंद्र नहीं है, बल्कि भारतीय स्थापत्य, पुरातत्व तथा सांस्कृतिक विरासत का उत्कृष्ट उदाहरण भी है। गया स्थित **विष्णुपद मंदिर** हिन्दू धर्म के प्रमुख तीर्थस्थलों में से एक है। मान्यता है कि यहाँ भगवान विष्णु के चरणचिह्न अंकित हैं। प्रत्येक वर्ष आयोजित होने वाला **पितृपक्ष मेला** विश्व का सबसे बड़ा श्राद्ध एवं पिंडदान समारोह माना जाता है, जिसमें भारत सहित अनेक देशों से श्रद्धालु अपने पूर्वजों के मोक्ष की कामना से आते हैं। यह धार्मिक आयोजन स्थानीय अर्थव्यवस्था, पर्यटन, होटल उद्योग, परिवहन तथा लघु व्यापार के विकास में महत्वपूर्ण योगदान देता है। **मंगला गौरी मंदिर** शक्ति उपासना का एक प्राचीन केंद्र है और इसे अष्टादश शक्तिपीठों में महत्वपूर्ण स्थान

प्राप्त है। इसी प्रकार **ब्रह्मयोनि पर्वत**, **रामशिला** और **प्रेतशिला** धार्मिक दृष्टि से अत्यंत पवित्र स्थल हैं, जिनका संबंध हिन्दू धार्मिक परंपराओं और पौराणिक कथाओं से है। इन स्थलों पर वर्षभर श्रद्धालुओं का आगमन बना रहता है।

मगध प्रमंडल की सांस्कृतिक धरोहर में **बराबर एवं नागार्जुनी गुफाएँ** विशेष महत्व रखती हैं। मौर्यकाल में निर्मित ये गुफाएँ भारत की सबसे प्राचीन शैल-कट गुफाओं में गिनी जाती हैं। इनकी स्थापत्य कला, पॉलिशयुक्त पत्थर की सतह तथा ऐतिहासिक महत्व भारतीय पुरातत्व की उत्कृष्ट उपलब्धि मानी जाती है। इन गुफाओं का संबंध आजीवक संप्रदाय से भी रहा है, जिससे इनका धार्मिक एवं ऐतिहासिक महत्व और अधिक बढ़ जाता है। **राजगीर** और **पावापुरी** भी मगध की धार्मिक पहचान के प्रमुख केंद्र हैं। राजगीर बौद्ध और जैन दोनों धर्मों के लिए समान रूप से महत्वपूर्ण है, जबकि पावापुरी भगवान महावीर के निर्वाण स्थल के रूप में विश्व प्रसिद्ध है। इसके अतिरिक्त अनेक सूफी दरगाहें, प्राचीन मठ तथा ऐतिहासिक स्मारक इस क्षेत्र की सांस्कृतिक विविधता को समृद्ध बनाते हैं। इन सभी स्थलों का समन्वित स्वरूप मगध प्रमंडल को भारत के महत्वपूर्ण धार्मिक पर्यटन क्षेत्रों में स्थापित करता है।

3.3 बौद्ध, हिन्दू, जैन एवं सूफी परंपरा

मगध प्रमंडल की सबसे बड़ी विशेषता इसकी बहुधार्मिक एवं बहुसांस्कृतिक परंपरा है। यहाँ बौद्ध, हिन्दू, जैन तथा सूफी परंपराओं का विकास विभिन्न ऐतिहासिक कालों में हुआ, किन्तु इन सभी ने मिलकर क्षेत्र की साझा सांस्कृतिक पहचान का निर्माण किया। बौद्ध धर्म के लिए बोधगया विश्व का सर्वाधिक पवित्र स्थल है, जहाँ ज्ञान प्राप्ति की घटना ने सम्पूर्ण विश्व के आध्यात्मिक इतिहास को नई दिशा प्रदान की। आज भी विभिन्न देशों के बौद्ध मठ, ध्यान केंद्र तथा सांस्कृतिक संस्थान इस क्षेत्र की वैश्विक पहचान को सुदृढ़ करते हैं। हिन्दू परंपरा में गया का विशेष स्थान है। पिंडदान, श्राद्ध, विष्णुपद मंदिर, मंगला गौरी शक्तिपीठ तथा पितृपक्ष मेला हिन्दू धार्मिक जीवन के महत्वपूर्ण अंग हैं। इन धार्मिक परंपराओं ने गया को मोक्षभूमि के रूप में प्रतिष्ठित किया है। यहाँ धार्मिक अनुष्ठानों से जुड़ी परंपराएँ केवल आध्यात्मिक महत्व ही नहीं रखतीं, बल्कि स्थानीय संस्कृति, सामाजिक जीवन और अर्थव्यवस्था को भी प्रभावित करती हैं। जैन धर्म की दृष्टि से राजगीर और पावापुरी अत्यंत पवित्र स्थल हैं। भगवान महावीर के जीवन, उपदेश और निर्वाण से जुड़े होने के कारण ये स्थान जैन श्रद्धालुओं के प्रमुख तीर्थ हैं। प्रतिवर्ष बड़ी संख्या में देश-विदेश से जैन अनुयायी इन स्थलों की यात्रा करते हैं, जिससे धार्मिक पर्यटन को भी बढ़ावा मिलता है। सूफी परंपरा ने मगध क्षेत्र में धार्मिक सद्भाव, सामाजिक समरसता और आध्यात्मिक संवाद की संस्कृति को विकसित किया। विभिन्न सूफी संतों की खानकाहें और दरगाहें आज भी सभी धर्मों के लोगों के लिए श्रद्धा और आस्था का केंद्र हैं। सूफी विचारधारा ने प्रेम, करुणा, सहिष्णुता और मानवता के मूल्यों को प्रोत्साहित किया, जिससे इस क्षेत्र की सांस्कृतिक विविधता और अधिक समृद्ध हुई। इन चारों धार्मिक परंपराओं का सह-अस्तित्व मगध प्रमंडल को भारत की "साझी सांस्कृतिक विरासत" का उत्कृष्ट उदाहरण बनाता है।

3.4 सांस्कृतिक महत्व

मगध की सांस्कृतिक पहचान का महत्वपूर्ण पक्ष इसकी सांस्कृतिक बहुलता है। यहाँ विभिन्न धर्मों और समुदायों की परंपराएँ एक-दूसरे का सम्मान करते हुए विकसित हुई हैं, जिसने सामाजिक समरसता और सांस्कृतिक सहिष्णुता को मजबूत किया है। धार्मिक उत्सव, मेले, पारंपरिक संगीत, लोककला, हस्तशिल्प तथा स्थानीय व्यंजन इस क्षेत्र की सांस्कृतिक विशिष्टता को और अधिक समृद्ध बनाते हैं। पर्यटन की दृष्टि से यह विरासत स्थानीय आर्थिक विकास का महत्वपूर्ण आधार है। धार्मिक पर्यटकों और विदेशी आगंतुकों की बढ़ती संख्या से होटल उद्योग, परिवहन, हस्तशिल्प, स्थानीय व्यापार, पर्यटन सेवाओं तथा रोजगार के अवसरों में निरंतर वृद्धि होती है। इससे स्थानीय समुदाय की आय में वृद्धि होने के साथ-साथ क्षेत्रीय विकास को भी गति मिलती है। इसके अतिरिक्त धार्मिक एवं

सांस्कृतिक धरोहरों का संरक्षण भारत की ऐतिहासिक पहचान को सुरक्षित रखने तथा सतत पर्यटन विकास को प्रोत्साहित करने के लिए अत्यंत आवश्यक है। यद्यपि मगध प्रमंडल में धार्मिक एवं सांस्कृतिक पर्यटन की अपार संभावनाएँ विद्यमान हैं, फिर भी विरासत संरक्षण, आधारभूत पर्यटन सुविधाओं का विस्तार, डिजिटल सूचना प्रणाली, पर्यटक प्रबंधन, स्वच्छता, स्थानीय समुदाय की सहभागिता तथा वैज्ञानिक संरक्षण जैसी चुनौतियाँ अभी भी विद्यमान हैं। इन चुनौतियों का प्रभावी समाधान ही इस क्षेत्र को राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय धार्मिक पर्यटन के एक आदर्श मॉडल के रूप में स्थापित कर सकता है। अतः आवश्यक है कि सांस्कृतिक विरासत संरक्षण और पर्यटन विकास के मध्य संतुलित एवं सतत नीति अपनाई जाए, जिससे मगध प्रमंडल की ऐतिहासिक धरोहरों का संरक्षण सुनिश्चित हो तथा स्थानीय सामाजिक-आर्थिक विकास को दीर्घकालिक आधार प्राप्त हो।

4. पर्यटन विकास के संदर्भ में विश्लेषण

4.1 धार्मिक पर्यटन की वर्तमान स्थिति

मगध प्रमंडल वर्तमान समय में भारत के प्रमुख धार्मिक पर्यटन क्षेत्रों में अपना विशिष्ट स्थान रखता है। यह क्षेत्र विभिन्न धार्मिक परंपराओं से जुड़े तीर्थस्थलों, आध्यात्मिक गतिविधियों तथा सांस्कृतिक आयोजनों के कारण वर्षभर देश एवं विदेश से आने वाले श्रद्धालुओं और पर्यटकों को आकर्षित करता है। धार्मिक आस्था के साथ-साथ ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक जिज्ञासा भी पर्यटकों के आगमन का महत्वपूर्ण कारण बन रही है। विशेष रूप से अंतरराष्ट्रीय बौद्ध समुदाय के कारण विदेशी पर्यटकों की निरंतर उपस्थिति ने इस क्षेत्र को वैश्विक धार्मिक पर्यटन मानचित्र पर स्थापित किया है। वहीं घरेलू स्तर पर धार्मिक अनुष्ठान, पर्व, मेले तथा पारंपरिक आस्थाएँ पर्यटक प्रवाह को निरंतर बनाए रखती हैं। इसके बावजूद अधिकांश पर्यटन गतिविधियाँ कुछ चुनिंदा स्थलों तक सीमित हैं, जबकि अनेक ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक धरोहरें अभी भी पर्यटन की मुख्यधारा से पूर्णतः नहीं जुड़ सकी हैं। इससे यह स्पष्ट होता है कि क्षेत्र में पर्यटन की वर्तमान स्थिति विकासशील है, किन्तु उपलब्ध संसाधनों और विरासत के अनुपात में इसकी संभावनाओं का अभी समुचित उपयोग नहीं हो पाया है।

4.2 पर्यटन अवसंरचना

पर्यटन विकास की सफलता केवल धार्मिक एवं सांस्कृतिक धरोहरों की उपलब्धता पर निर्भर नहीं करती, बल्कि प्रभावी अवसंरचना भी इसकी आधारशिला होती है। पिछले कुछ वर्षों में सड़क, रेल तथा वायु संपर्क में सुधार के कारण प्रमुख धार्मिक स्थलों तक पहुँच पहले की अपेक्षा अधिक सुगम हुई है। आवासीय सुविधाओं, होटल, अतिथि गृह, भोजनालय तथा परिवहन सेवाओं का भी क्रमिक विस्तार हुआ है। इसके बावजूद क्षेत्रीय स्तर पर पर्यटन अवसंरचना में असमानता स्पष्ट दिखाई देती है। प्रमुख पर्यटन स्थलों की तुलना में कम प्रसिद्ध धार्मिक एवं सांस्कृतिक स्थलों पर स्वच्छता, पार्किंग, पर्यटक सूचना केंद्र, व्याख्या केंद्र, दिशासूचक संकेतक, डिजिटल सूचना प्रणाली, आपातकालीन चिकित्सा सुविधा तथा प्रशिक्षित पर्यटन मार्गदर्शकों का अभाव देखा जाता है। इसके अतिरिक्त दिव्यांगजन-अनुकूल सुविधाएँ, पर्यावरण-अनुकूल परिवहन तथा स्मार्ट पर्यटन प्रबंधन प्रणाली का विकास भी अपेक्षित स्तर तक नहीं हो सका है। परिणामस्वरूप अनेक संभावित पर्यटन स्थलों का आकर्षण सीमित रह जाता है तथा पर्यटकों का अनुभव भी अपेक्षित गुणवत्ता प्राप्त नहीं कर पाता।

4.3 स्थानीय अर्थव्यवस्था एवं रोजगार पर प्रभाव

धार्मिक पर्यटन ने मगध प्रमंडल की स्थानीय अर्थव्यवस्था को प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष दोनों स्तरों पर प्रभावित किया है। पर्यटन गतिविधियों के विस्तार से होटल, रेस्तराँ, परिवहन, हस्तशिल्प, स्थानीय बाजार, पूजा सामग्री, सांस्कृतिक कार्यक्रमों तथा लघु व्यवसायों में आर्थिक गतिविधियों का विस्तार हुआ है। इससे स्वरोजगार तथा सूक्ष्म उद्यमों को

प्रोत्साहन मिला है और स्थानीय युवाओं के लिए सेवा क्षेत्र में नए रोजगार अवसर उत्पन्न हुए हैं। पर्यटन से प्राप्त आय ने अनेक परिवारों की आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने में योगदान दिया है। साथ ही महिलाओं की स्वयं सहायता समूहों, स्थानीय हस्तशिल्प, पारंपरिक खाद्य पदार्थों तथा सांस्कृतिक उत्पादों को भी नया बाजार उपलब्ध हुआ है। यद्यपि पर्यटन से आर्थिक लाभ प्राप्त हो रहे हैं, फिर भी इन लाभों का वितरण समान रूप से नहीं हो पाया है। अधिकांश आर्थिक गतिविधियाँ प्रमुख पर्यटन स्थलों तक सीमित हैं, जबकि ग्रामीण एवं अपेक्षाकृत कम विकसित क्षेत्रों को पर्यटन से मिलने वाले लाभ सीमित मात्रा में प्राप्त होते हैं। इसलिए पर्यटन विकास को स्थानीय समुदाय की व्यापक भागीदारी से जोड़ना आवश्यक है, जिससे समावेशी एवं संतुलित आर्थिक विकास सुनिश्चित किया जा सके।

4.4 संरक्षण एवं प्रबंधन की स्थिति

मगध प्रमंडल की धार्मिक एवं सांस्कृतिक धरोहरों का संरक्षण विभिन्न सरकारी संस्थाओं, स्थानीय प्रशासन तथा धार्मिक ट्रस्टों द्वारा किया जा रहा है। अनेक महत्वपूर्ण स्थलों पर संरक्षण कार्य, सौंदर्यीकरण, आधारभूत सुविधाओं का विस्तार तथा पर्यटन प्रबंधन की दिशा में उल्लेखनीय प्रयास किए गए हैं। इसके बावजूद विरासत प्रबंधन की वर्तमान व्यवस्था अनेक चुनौतियों का सामना कर रही है। कई ऐतिहासिक स्थलों पर अनियोजित निर्माण, अतिक्रमण, पर्यावरणीय दबाव, ठोस अपशिष्ट प्रबंधन की कमी तथा अत्यधिक पर्यटक भार के कारण मूल सांस्कृतिक स्वरूप प्रभावित होने की आशंका बनी रहती है। संरक्षण गतिविधियों में आधुनिक तकनीक, डिजिटल अभिलेखीकरण, नियमित निगरानी तथा वैज्ञानिक संरक्षण पद्धतियों का उपयोग अभी भी सीमित है। इसके अतिरिक्त स्थानीय समुदाय, शैक्षणिक संस्थानों तथा नागरिक संगठनों की भागीदारी को अपेक्षित महत्व नहीं मिल पाया है। प्रभावी संरक्षण तभी संभव है जब विरासत प्रबंधन को केवल सरकारी उत्तरदायित्व न मानकर सामुदायिक सहभागिता एवं संस्थागत समन्वय पर आधारित मॉडल विकसित किया जाए।

4.5 प्रमुख चुनौतियाँ एवं संभावनाएँ

मगध प्रमंडल धार्मिक एवं सांस्कृतिक पर्यटन की दृष्टि से अत्यंत समृद्ध होने के बावजूद अनेक विकासात्मक चुनौतियों का सामना कर रहा है। पर्यटन स्थलों के मध्य समन्वित संपर्क का अभाव, सीमित प्रचार-प्रसार, पर्यटन उत्पादों का अपर्याप्त विविधीकरण, प्रशिक्षित मानव संसाधन की कमी, डिजिटल विपणन का सीमित उपयोग तथा पर्यावरणीय संरक्षण से संबंधित समस्याएँ पर्यटन विकास की गति को प्रभावित करती हैं। इसके अतिरिक्त पर्यटन नीति और स्थानीय विकास योजनाओं के बीच प्रभावी समन्वय का अभाव भी अनेक परियोजनाओं के अपेक्षित परिणामों में बाधा उत्पन्न करता है। दूसरी ओर, इस क्षेत्र में सतत पर्यटन विकास की संभावनाएँ अत्यंत व्यापक हैं। धार्मिक पर्यटन को सांस्कृतिक, विरासत, पारिस्थितिक तथा ग्रामीण पर्यटन के साथ एकीकृत कर बहुआयामी पर्यटन मॉडल विकसित किया जा सकता है। आधुनिक सूचना प्रौद्योगिकी, डिजिटल गाइड प्रणाली, विरासत व्याख्या केंद्र, थीम-आधारित पर्यटन परिपथ, स्थानीय हस्तशिल्प बाज़ार तथा समुदाय-आधारित पर्यटन पहलें इस क्षेत्र की प्रतिस्पर्धात्मक क्षमता को उल्लेखनीय रूप से बढ़ा सकती हैं। साथ ही, स्थानीय समुदाय की सक्रिय सहभागिता, कौशल विकास, पर्यावरण संरक्षण तथा विरासत के वैज्ञानिक प्रबंधन को प्राथमिकता देकर पर्यटन को दीर्घकालिक एवं समावेशी विकास के प्रभावी साधन में परिवर्तित किया जा सकता है।

5. निष्कर्ष एवं सुझाव

5.1 निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य क्षेत्र की ऐतिहासिक विरासत, धार्मिक परंपराओं तथा पर्यटन विकास के मध्य अंतर्संबंधों का समग्र विश्लेषण करना था। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि मगध प्रमंडल भारतीय सभ्यता, धर्म और संस्कृति का

एक महत्वपूर्ण केंद्र रहा है, जहाँ बौद्ध, हिन्दू, जैन तथा सूफी परंपराओं ने समय के साथ एक समृद्ध एवं बहुआयामी सांस्कृतिक परिदृश्य का निर्माण किया है। इस क्षेत्र की धार्मिक धरोहरें केवल आस्था के केंद्र नहीं हैं, बल्कि वे भारतीय इतिहास, स्थापत्य कला, पुरातात्त्विक महत्व तथा सांस्कृतिक निरंतरता की जीवंत अभिव्यक्ति भी हैं। अध्ययन से यह भी स्पष्ट हुआ कि धार्मिक पर्यटन ने मगध प्रमंडल की स्थानीय अर्थव्यवस्था को नई गति प्रदान की है। पर्यटन गतिविधियों के विस्तार से होटल, परिवहन, हस्तशिल्प, स्थानीय व्यापार, सांस्कृतिक सेवाओं तथा लघु उद्यमों का विकास हुआ है, जिससे प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष दोनों प्रकार के रोजगार अवसरों में वृद्धि हुई है। विशेष रूप से धार्मिक आयोजनों एवं तीर्थ यात्राओं के दौरान स्थानीय आर्थिक गतिविधियों में उल्लेखनीय विस्तार देखने को मिलता है। इससे यह सिद्ध होता है कि धार्मिक पर्यटन केवल सांस्कृतिक संरक्षण का माध्यम नहीं, बल्कि क्षेत्रीय आर्थिक विकास का भी प्रभावी आधार है। यद्यपि हाल के वर्षों में पर्यटन अवसंरचना तथा पर्यटन प्रबंधन में सुधार के लिए अनेक प्रयास किए गए हैं, फिर भी आधारभूत सुविधाओं की असमान उपलब्धता, विरासत स्थलों के संरक्षण की चुनौतियाँ, पर्यावरणीय दबाव, सीमित डिजिटल प्रबंधन, प्रशिक्षित मानव संसाधन का अभाव तथा स्थानीय समुदाय की सीमित भागीदारी जैसी समस्याएँ अभी भी विद्यमान हैं। इसके अतिरिक्त अधिकांश पर्यटन गतिविधियाँ कुछ प्रमुख स्थलों तक ही सीमित हैं, जिसके कारण क्षेत्र की अनेक महत्वपूर्ण धार्मिक एवं सांस्कृतिक धरोहरें पर्यटन के मुख्य प्रवाह से अपेक्षित रूप से नहीं जुड़ पाई हैं। समग्र रूप से अध्ययन यह निष्कर्ष प्रस्तुत करता है कि यदि धार्मिक धरोहरों के संरक्षण, पर्यटन अवसंरचना के सुदृढ़ीकरण, आधुनिक प्रबंधन प्रणाली, स्थानीय समुदाय की सक्रिय सहभागिता तथा पर्यावरणीय संतुलन को एकीकृत दृष्टिकोण से विकसित किया जाए, तो मगध प्रमंडल धार्मिक एवं सांस्कृतिक पर्यटन के क्षेत्र में राष्ट्रीय ही नहीं, बल्कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी अपनी विशिष्ट पहचान को और अधिक सुदृढ़ कर सकता है। इसलिए विरासत संरक्षण और पर्यटन विकास को परस्पर पूरक प्रक्रिया के रूप में अपनाना क्षेत्र के दीर्घकालिक एवं समावेशी विकास के लिए अत्यंत आवश्यक है।

5.2 नीति संबंधी सुझाव

अध्ययन के निष्कर्षों के आधार पर निम्नलिखित नीतिगत सुझाव प्रस्तुत किए जाते हैं—

1. मगध प्रमंडल के लिए एक समेकित धार्मिक एवं सांस्कृतिक पर्यटन नीति तैयार की जाए, जिसमें विरासत संरक्षण, पर्यटन विकास तथा स्थानीय आर्थिक सशक्तिकरण को समान महत्व दिया जाए।
2. प्रमुख एवं कम विकसित धार्मिक स्थलों को जोड़ते हुए एकीकृत पर्यटन परिपथ विकसित किए जाएँ, जिससे पर्यटकों का प्रवास काल बढ़े और पर्यटन के लाभ व्यापक क्षेत्र तक पहुँच सकें।
3. पर्यटन स्थलों पर स्वच्छता, पेयजल, पार्किंग, संकेतक, डिजिटल सूचना प्रणाली, पर्यटक सहायता केंद्र तथा दिव्यांगजन-अनुकूल सुविधाओं का विस्तार किया जाए।
4. स्थानीय युवाओं के लिए पर्यटन प्रबंधन, भाषा कौशल, विरासत व्याख्या तथा आतिथ्य सेवाओं से संबंधित नियमित प्रशिक्षण कार्यक्रम संचालित किए जाएँ।
5. पर्यटन विकास में स्थानीय समुदाय, स्वयं सहायता समूहों, हस्तशिल्पियों एवं लघु उद्यमियों की भागीदारी सुनिश्चित की जाए, जिससे पर्यटन से प्राप्त आर्थिक लाभों का समान वितरण हो सके।
6. धार्मिक एवं सांस्कृतिक स्थलों के डिजिटल अभिलेखीकरण, वर्चुअल प्रचार तथा डिजिटल विपणन को बढ़ावा दिया जाए, जिससे राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर उनकी पहुँच का विस्तार हो।
7. पर्यटन विकास योजनाओं के निर्माण एवं क्रियान्वयन में पुरातत्व, पर्यटन, संस्कृति, स्थानीय प्रशासन एवं धार्मिक संस्थाओं के मध्य प्रभावी समन्वय स्थापित किया जाए।

5.3 विरासत संरक्षण एवं सतत पर्यटन विकास के लिए अनुशंसाएँ

मगध प्रमंडल की धार्मिक एवं सांस्कृतिक धरोहरों के दीर्घकालिक संरक्षण के लिए वैज्ञानिक संरक्षण पद्धतियों, नियमित रखरखाव तथा डिजिटल प्रलेखन को प्राथमिकता दी जानी चाहिए। विरासत स्थलों पर अनियंत्रित निर्माण, अतिक्रमण एवं पर्यावरणीय क्षरण को रोकने के लिए प्रभावी नियामक व्यवस्था विकसित करना आवश्यक है। प्रत्येक प्रमुख स्थल के लिए विरासत प्रबंधन योजना तैयार की जानी चाहिए, जिसमें संरक्षण, पर्यटक प्रबंधन, जोखिम नियंत्रण तथा पर्यावरण संरक्षण के स्पष्ट प्रावधान हों। सतत पर्यटन विकास के लिए आवश्यक है कि पर्यटन गतिविधियों का विस्तार केवल पर्यटकों की संख्या बढ़ाने तक सीमित न रहकर प्राकृतिक संसाधनों, सांस्कृतिक मूल्यों तथा स्थानीय सामाजिक संरचना के संरक्षण के साथ किया जाए। स्थानीय समुदाय को पर्यटन विकास का सक्रिय भागीदार बनाते हुए समुदाय-आधारित पर्यटन मॉडल को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। साथ ही, पर्यावरण-अनुकूल परिवहन, स्वच्छ ऊर्जा, अपशिष्ट प्रबंधन, जल संरक्षण तथा हरित पर्यटन मानकों को पर्यटन विकास योजनाओं का अभिन्न अंग बनाया जाना चाहिए।

अंततः, मगध प्रमंडल की धार्मिक एवं सांस्कृतिक धरोहर केवल बिहार की नहीं, बल्कि सम्पूर्ण भारतीय सभ्यता की अमूल्य विरासत है। इसके संरक्षण, सुव्यवस्थित प्रबंधन तथा सतत पर्यटन विकास के माध्यम से न केवल सांस्कृतिक पहचान को सुरक्षित रखा जा सकता है, बल्कि क्षेत्रीय आर्थिक प्रगति, रोजगार सृजन, सामाजिक सहभागिता एवं अंतरराष्ट्रीय सांस्कृतिक संवाद को भी नई दिशा प्रदान की जा सकती है। अतः विरासत संरक्षण और पर्यटन विकास के मध्य संतुलित एवं सहभागी दृष्टिकोण ही इस क्षेत्र के दीर्घकालिक, समावेशी और सतत विकास का सबसे प्रभावी आधार सिद्ध होगा।

संदर्भ

1. धीरज, ए., कुमार, एस., एवं रानी, डी. (2022). बिहार पर्यटन का सतत विकास: उद्यमिता का एक अवसर। *इंस्टीट्यूशन्स, रेज़िलिएंस एंड डायनेमिक कैपेबिलिटीज़ ऑफ एंटरप्रेन्योरियल इकोसिस्टम्स इन इमर्जिंग इकोनॉमीज़।* आईजीआई ग्लोबल साइंटिफिक पब्लिशिंग।
2. कुमारी, टी. (2022). कोविड-19 के पश्चात बिहार राज्य में बौद्ध पर्यटन को बढ़ावा देने में सरकार की भूमिका का मूल्यांकन। *डोमेस्टिक टूरिज्म एंड हॉस्पिटैलिटी मैनेजमेंट।* आईजीआई ग्लोबल।
3. घोष, पी., चक्रवर्ती, टी., एवं जोहरी, एच. (2024). बोधगया, भारत एक बौद्ध सांस्कृतिक विरासत स्थल के रूप में: तीर्थयात्रा से पर्यटन तक की यात्रा। *मैपिंग टाइम जर्नीज़ इन इंडिया* (खंड 3)। स्प्रिंगर।
4. शर्मा, एस., एवं बेहेरा, एम. आर. (2025). पर्यटन वित्त एवं मंदिर अर्थव्यवस्था: भारत के धार्मिक पर्यटन परिदृश्य का निर्माण।
5. कुमारी, ए. (2025). बिहार में पर्यटन क्षमता का मूल्यांकन: पर्यटन विकास को प्रभावित करने वाले समग्र संकेतकों पर आधारित जिला स्तरीय अध्ययन। *अवाहन: ए जर्नल ऑन हॉस्पिटैलिटी एंड टूरिज्म।*
6. कुमार, एस. (2025). बिहार के प्रमुख पर्यटन स्थलों के ब्रांडिंग एवं पोज़िशनिंग के पुनरुद्धार की रणनीतियाँ: एक अध्ययन।
7. कुमार, पी. (2026). बिहार में खाद्य संस्कृति एवं पर्यटन को बढ़ावा देने में उत्सवों की भूमिका। *इंटरसेक्शन्स ऑफ कल्चर, इकोनॉमी एंड सस्टेनेबिलिटी इन टूरिज्म।* आईजीआई ग्लोबल।
8. साहा, पी., एवं बिस्वास, ए. (2026). धार्मिक पर्यटन: आत्म-निर्धारण, सामाजिक प्रभाव एवं सरकारी पहल। *मैनेजमेंट डिसीजन।*

9. कुमार, एस. (2026). बिहार में सतत पर्यटन विकास एवं गंतव्य ब्रांडिंग।
10. निहाल, सी., एवं सील, पी. पी. (2027). धार्मिक उत्सवों के माध्यम से सतत पर्यटन विकास: बिहार में छठ पूजा का अध्ययन। आईजीआई ग्लोबल।